International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Issue: 4 | Vol.: 8 | Oct.-Nov.-Dec.-2021 | Pages: 29–33 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

मृणाल पाण्डे की कहानियों में नारी के विविध रूप

पूनम मियान
बी–502/ए डबल स्टोरी, बृज विहार गाजियाबाद उत्तर प्रदेश, भारत

Received : 26/11/2021 ***1st BPR*** : 02/12/2021 ***2nd BPR*** : 05/12/2021 ***Accepted*** : 11/12/2021

Abstract

भारतीय समाज में एक नारी से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने सभी रूपों के निर्वहन में खरी उतरे। मृणाल पाण्डे की कहानियों में नारी अनेकरूपों माँ, बहिन, पत्नी, भाभी, ननद, प्रेमिका, देवरानी जेठानी, सास, बहू, काकी, बुआ आदि रूपों में उपस्थित हुई है। नारी पात्रों की प्रमुखता उनकी कहानियों का वास्तविक रूप प्रदान करते हैं। जीवन–पथ के लम्बे सुर में सुःख–दुःख को वहन करती हुई नारी जहाँ एक तरफ शिक्षित व आत्मनिर्भर होते हुए भी लाचारी व बेबसी के कारण परिजनों द्वारा भावनात्मक रूप में शोषित हुई दिखती है तो वही दूसरी ओर अपनी उन्मुक्ता के कारण उसकी चरित्रहीनता भी निरुपित हुई है। इन रूपों को बदलने की जरुरत के प्रति आवाज उठती नरियों के स्वर, कहानियों में चिंगारी का लिए उठते प्रतीत हुए हैं। नारी के विविध रूपों में उसका उदात्त व्यक्तित्व भी प्रकट हुआ है। अलग–अलग भूमिकाओं का निर्वहन करती हुई नारी अनेक तरह के संघर्षों व कठिनाईयों में भी जीवन को संतुलित करने का प्रयत्न करती हुई चित्रित हुई हैं।इस सृष्टि को अधिक सुंदर बनाने के लिए ईश्वर ने नारी की संरचना की। नारी ही परिवार से लेकर समाज के भविष्य की निर्मात्री है। किसी भी युग के इतिहास में झाँककर देखें तो हम पाते हैं कि अनेक महान लोग नारी के किसी न किसी रूप में प्रभावित होकर युगपुरुष बने हैं।

Keywords: नारी, रूप, स्त्री, आत्मनिर्भर, लड़की।

सृष्टिकर्ता की अद्वितीय सृष्टि है नारी, वह स्वयं सृष्टि विधायिनी है प्रकृति स्वरूपा है। प्रकृति और पुरुष अथवा नारी और नर एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनो एक दूसरे के पूरक हैं। एक के अभाव में दूसरे का कोई अस्तित्व नहीं है। दोनो तत्वतः अभिन्न हैं, एक–दूसरे में समाहित हैं। स्त्री और पुरुष शिव और शक्ति के प्रतिरुप हैं। शिव की अर्धनारीश्वर के रूप में परिकल्पना, उनके परस्पर अद्वैतभाव की परिचायक है। नारी के बिना मानव सृष्टि की कल्पना असंभव है।''[1] ''स्त्री पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ होती है जितना प्रकाश अंधेरे से मनुष्य के लिए क्षमा त्याग और अहिंसा जीवन के उच्चतम आदर्श हैं नारी इन आदर्श को प्राप्त कर चुकी है। ''[2]

माँ के रूप में नारी

''ममत्व संसार की सबसे बड़ी साधना सबसे बड़ी तपस्या सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान विजय है।''[3] मृणाल पाण्डे की कहानियों में नारी मानव जीवन में बहुआयामी भूमिकाओं का निर्वहन करती है। जब एक नारी माँ के रूप में अपनी भूमिका निभाती है तो अपने बच्चे के पहले स्पर्श से ही पुलकित हो उठती है। नारी में ममत्व का गुण तो उसकी रचना के साथ ही जन्मा है। परन्तु एक माँ और बच्चे का बंधन जीवन पर्यन्त चलता रहता है। लेखिका की कहानियों में माता के आदर्श स्वरूप को भी दिखाया गया हैं। तथा आधुनिक भोगवादी संस्कृति के प्रभाव में फंस चुकी उन स्वछंद प्रवृति की माताओं का भी चित्रण हुआ है जिनके कृत्यों से समाज शर्मसार व बच्चे खिन्न रहते हैं रुढ़िवादी परम्पराओं में बंधी माताएं भी चित्रित हुई हैं जो लोक–लाज के डर से अपनी जवान होती हुई बेटियों को नीति–विषयक उपदेश देकर पाबंदियों में ही रखना चाहती हैं।

इनकी लड़कियाँ कहानी में माँ की भूमिका निभाती हुई दो चरित्र हैं। यद्यपि दोनों चरित्र परस्पर माँ बेटी हैं किंतु एक पीढ़ी के अंतराल बावजूद वे दो भारतीय माँ के आदर्श को प्रस्तुत करती है। एक माँ के रूप में चित्रित नारी जहाँ एक ओर लड़के के लिए तीन बेटियों के बावजूद गर्भ धारण करती हैं, वहीं दूसरी माँ चरित्र अपनी पुत्री कल्याण के लिए देवी से प्रार्थना करती है ''हे देवी मेरी लाज रखना इस बार ये मायके से बेटा लेकर जाए।''[4]इस कहानी में लेखिका ने रुढ़िवादी परम्परा को मानने वाली माँ के मन की व्यथा को प्रस्तुत किया है। जो भगवान से बेटे की चाह में प्रार्थना करती हुई प्रतीत होती है। 'धूप–छांव' नामक कहानी के माध्यम से लेखिक ने माँ की उस भावना की अभिव्यक्ति की है जब बेटे–बहू के चले जाने के बाद वह घर में अकेली रह जाती हैं। बेटे के कभी–कभार आने पर अपने अकेलेपन व बुढ़ापे की परेशानियों का जिक्र तक नहीं करती क्योंकि वो यही चाहती है कि बच्चे जहाँ रहें सुखी रहें। 'हिंदर्दा मेयो का मंझला' नामक कहानी में चित्रित नारी चरित्र भी भारतीय माँ के आदर्श को प्रस्तुत करती है और बेटों की हित की

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Issue: 4 | Vol.: 8 | Oct.-Nov.-Dec.-2021 | Pages: 29–33 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

कामना करते हुए तब तुमसे कह रही हूँ लला जो स्वास्थ्य परमारथ इस घर के बंटवारे को मैंने भोगा है ईश्वर किसी को न दिखाए। गरीबी में लड़के पालना हथेली का माँस खाना ठहरा।''[5]

'कोहरा और मछलियाँ' नामक कहानी में लेखिका ने ऐसी नारी के रूप को प्रदर्शित किया है जो तेजी से बदलते सामाजिक व सांस्कृतिक बदलाव के कारण पश्चिमी सभ्यता के खुलेपन का अनुसरण करते हुए यह भी भूल जाती है कि उसके दुश्चरित्र से बच्चों की मनोदशा किस प्रकार प्रभावित होती है। इस कहानी के रति और बानो के कथनों से माँ की भूमिका में चित्रित नारी चरित्र भारतीय आदर्श को कलंकित करती दिखाई देती हैं बानो अपने माँ के प्रति जिस तरह का कथन करती है उससे भारतीय माँ के आदर्श पर प्रश्न चिह्न लग जाता हैं– ''बाई जोब बानो, तुमने अपनी माँ का हुस्न पाया है, मैंने बच्चू को वो धक्का दिया कि अब वह पीठ सहला रहा होगा। मेरे ऑफिस में सारे लोग ममी और उसको लेकर मजाक उड़ाते हैं और ममी ...।''[6]

'सुपारी फुआ' कहानी में लेखिका ने ऐसी माँ अत्यधिक दुःखी तो है ही परन्तु उसे मायके लाए जाने पर संदेश देती है। ''लली मायके की रोटी तोड़नी है तो आंख–कान पर लगाम देकर चमड़े की चीभ पर तुझे पट्ट ताला जैसा डालना होगा।''[7]इस कहानी में माँ की भावनाएं तो मजबूती से बाल विधवा बेटी से जुड़ी हुई प्रतीत होती हैं लेकिन वह सामाज की रुढ़िगत रीति–रिवाज के डर से बेटी को आचार संहिता का पाठ–पढ़ाते रहती है। लेखिका की 'व्यक्तिगत' कहानी में माँ के रूप में चित्रित नारी का चरित्र भी भारतीय आदर्श माँ के रूप को प्रस्तुत करता है। जिसका उद्घाटन पुत्र के स्वगत कथनों से होता है। ''माँ गर्म चाय का भापदार प्याला रखकर बाहर जा रही थी। जब कभी वह आराम करता है तब पास बैठकर कच–कच करें, उनका ऐसा स्वभाव नहीं है। वह मन–ही–मन माँ की इस आत्मीय चुप्पी के लिए कृतज्ञ है। ... क्या कभी बाबा ने ऐसा महसूस किया होगा ?''[8] इनकी 'चिमगादड़े' कहानी में माँ की भूमिका में चित्रित नारी पात्र ईसाई धर्म से संबंद्ध है फिर भी उसमें भारतीय आदर्श माँ का रूप दिखाई देता है जिससे सोनिया व मरिया प्रभावित होती है और अपनी माँ की सेवा करती हैं। इनकी 'कुनू' नामक कहानी में भी नारी चरित्र भारतीय माँ के आदर्श को ही प्रस्तुत करती हैं, जो अपनी बेटी के प्रति भारतीय माँ की भांति चिंता व्यक्त करती है।

इस प्रकार मृणाल पाण्डे ने अपनी कहानियों में माँ के रूप में नारी चरित्र दो रूपों में चित्रित की है। एक वे माँ चरित्र जो भारतीय माँ के आदर्श रूप को प्रस्तुत करती हैं। जिन्हें अपने बच्चों के प्रति अत्यंत प्रेम है और अपने बच्चों के प्रति सजग रहती हैं। दूसरी माँ के रूप में ऐसी चरित्र जो प्रगतिशील है और पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करती है वे अपने बच्चों के हितों की अपेक्षा अपने हितों का सर्वोपरी मानती हैं।

पत्नी के रूप में नारी

''पुरुष के जीवन में माँ के बाद दूसरा स्थान पत्नी का है। पत्नी यदि पतिव्रता, कुशल गृहिणी, बुद्धि विवेक सम्पन्न तथा सद्गुणों से युक्त हो तो पति का जीवन स्वर्ग के समान आनंदमयी हो जाता है। इसके विपरीत स्थिति होने पर जीवन नरकमय भी हो जाता है।''[9]

मृणाल पाण्डे की कहानियों में पत्नी के संबंध में स्त्री चरित्रों का पर्याप्त चित्रित होने का अवसर मिलता है। इनकी कहानियों में पत्नी के संबंध में चित्रित नारी एक ओर भारतीय आदर्श को प्रस्तुत करती है किंतु कुछ कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें पत्नी के रूप में चित्रित नारी स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है। इनकी 'रिक्ति', कैंसर' 'आततायी', 'खेल', 'लड़कियाँ', 'हिर्दा मेयो का मंझला', 'एक स्त्री' का विदीगीत' आदि काहनियों में चित्रित नारी चरित्र पत्नी के संबंधों में भारतीय आदर्श को प्रस्तुत करती है। 'रिक्ति' नामक कहानी में लेखिका ने उस पत्नी की व्यथित गाथा को उजागर किया है जो पति की आज्ञा का पालन करती हैं। कहानी की नायिका संगीत प्रेमी है। वह संगीत के शौक को प्रतिभा के रूप में निखाकरना चाहती है परन्तु पति के कठोर नियंत्रण के कारण अपनी इच्छा को दबा लेती है और पति की आज्ञा को शिरोधार्य कर लेती है। इसमें लेखिका ने पत्नी के त्याग व समर्पण का वर्णन किया है। इनकी 'कैंसर' कहानी में पत्नी की भूमिका को निभाते हुए सुरजी भारतीय आदर्श को प्रस्तुत करती है। किंतु कुछ कहानियां ऐसी हैं जिनमें पत्नी के प में चित्रित नारी स्वच्छंद जीवन जीना चाहती है।

सूरजी पूरे मनोभाव से अपने पति की सेवा करती है। लेखिका की प्रसिद्ध कहानी 'एक स्त्री का विदागीत' में नारी विवेकशील, पति समेत अपने परिवार के प्रति पर्याप्त चिंतनशील चित्रित हुई है। सुषमा कॉलेज की प्राध्यापिका होने के बावजूद भी अपने परिवार के साथ तालमेल बनाए रखती है वह अपनी सास व ननदों के साथ–साथ पति का भी पूरा ख्याल रखती है। इस प्रकार सुषमा ने अपने दामपत्य जीवन को मधुर वचनों से सुखमय बनाया है।

मृणाल पाण्डे समकालीन कथाकार है इस दृष्टि से इनकी 'कोहरा व मछलियाँ' कहानी उल्लेखनीय है। इस कहानी में एक पत्नी का ऐसा रूप दिखाया गया है। जिसे हमारी संस्कृति स्वीकार नहीं करती। रति की माँ अपने पति के प्रति छल पूर्वक दिखावे का नाटक किस प्रकार करती है। उसको स्वयं पुत्री उद्घाटित करते हुए कहती है। '' कभी–कभी इंटरव्यू के लिए तस्वीर खिंचवाने आ जाती।पापा को थामें ममी ढेर सारी तस्वीरें खिंचवाती, पापा को सूप पिलाते हुए ... पापा का हाथ थामें उनकी आँखों में झांकते हुए। फिर वही तस्वीरे पत्रिकाओं में छपती–ममी के अज्ञात पातिव्रत्य पर पुष्टि की मोहर।'[10]पतिव्रता धर्म का पालन करने वाली पत्नी को ही श्रेष्ठ माना गया है।

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Issue: 4 | Vol.: 8 | Oct.-Nov.-Dec.-2021 | Pages: 29–33 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

दादी के रूप में नारी

मृणाल पाण्डे की कहानियों में दादी के रूप में नारी चरित्रों को चित्रित होने का अवसर मिला है। 'एक स्त्री का विदागीत' नामक कहानी में ऐसी दादी चरित्र को चित्रित किया गया है। जो अपने पोतों व पोतियों को बराबर प्यार करती हैं। 'बचुली चौकरीदारिन की कढी' में एक विवश वृद्ध नारी, दादी के रूप में चित्रित है। उसके युवा बहु व बेटे की मृत्यु हो चुकी है उसके ऊपर अस्वस्थ होते पोते का पालन–पोषण का भार है। इस कहानी में ऐसी दादी के वात्सल्य को दर्शाया गया है जो कि वाकई में अपने पोते की भूख मिटाने या छोटी सी इच्छा पूर्ति के लिए कढ़ी बनाने हेतु पूरे गांव में समान माँगती फिरती है। गांव वाले आपस में बात करते हुए कहते है ''कहाँ से पकाएगी इस अभागे के लिए वह पकौड़ी वाली कढ़ी ? कम ऐठम चाहिए कढ़ी को क्या ? सरसो का तेल चाहिए ? बेसन चाहिए और चाहिए छांछ, छौंक भर को हींग–जीरा, मिर्च तो तिवारी की घरवाली उसे सिर फेंक भी देगी पर बाकी चीज इसके बावजूद भी वह कढ़ी के समान जुटा लेती है। 'चूल्हा जलाती, कढ़ाही बबू सविस्तार बताती जा रही थी कि कैसे हरदत्त जैसे कंजूस मक्खीचूस तक से हरा धनिया मिर्ची और बाकि लोगों से घी, तेल, छाछ फेंकते सरसों का तेल में पकौड़ी छोड़ने लगे बस लालौ, ये बेसन और थाली लेकर वो उठी ही थी कि फटी धोती में उसका पैर जा फंसा और थाली झन्न–झनाक सामने दीवार में सुदर्शन चक्र जैसी टकराई ! हाय–हाय–हाय! त्माम दीवार और गिरा दिया। तब बचुली कहती है कि पतीले में रखी कढ़ी उसी के लिए है यह सुनकर सुरिया कहता है– वो तो सारे तेरे हिस्से की है तब बूचली झूठ कहती है ''आज मुझे अफरा हो रहा है क्योंकि हरदत्त की घरवाली ने गोद–पाक खिला दिया। साबुली की ईजा ने चाय व खजूर और सूबेदारनी ने मक्का और रोटी दे दी।'' [11]यह कहते हुए दादी बचूली अपने हिस्से का भात सुरिया को खिला देती है जबकि सच्चाई यह है कि वह भूखी है और झूठा डकार भी लेती है जिससे पोते को लगे कि उसका पेट भरा है।

नानी के रूप में नारी

मृणाल पाण्डे की कहानियाँ मे नानी के रूप में नारी चरित्र का उद्घाटन किया गया है। इनकी 'लड़कियाँ' व 'एक स्त्री का विदागीत' कहानी में नानी के रूप में स्त्री चरित्र को चित्रित होने का अवसर मिलता है। इनकी 'लड़कियाँ' कहानी की नानी चरित्र पारम्परिक मान्यताओं को स्वीकार करते हुए दिखाई देती है। इसलिए तो वह अपनी बेटी की लड़की को नारी होने का बोध कराते हुए कहती है कि तुमने लड़की का जन्म लिया है। पैर छूना सीख लो लड़कियों ने जो जिंदगी भर झुकना ही है इसलिए झुककर प्रणाम करो। इसके साथ ही साथ नानी पोतियों की अपेक्षा पोतों को महत्व देती है और अपनी बेटी के लिए पुत्र प्राप्ति की पार्थना करती है। इस कहानी की मंझली बेटी जब अपनी नानी के साथ सोने के लिए जाती है तब नानी अपने बेटे के लड़के को सुला रही होती है और पोती को सुलाने के लिए मना कर देती है। उसके माँ के साथ सोने का आदेश देती है। नानी की यह भावना अकारण नहीं है बल्कि भारतीय रुढ़िवादी पम्परा को व्यक्त करती है। 'एक स्त्री का विदागीत' कहानी की नानी चरित्र अपने बेटे, बेटियों के बच्चों के प्रति वह अपार प्रेम करती दिखाई देती है वह अपने नाती–पोतों से कहती हैं क्या खाओंगे, मखाने की खीर बनाऊ या चिरौंजी के लड्डु उनके लिए खाने की चीज छुपा कर रखती हैं।

इस प्रकार 'एक स्त्री का विदागीत' कहानी के माध्यम से नानी का अद्भुत वात्सल्य प्रकट होता है।

बहन के रूप में नारी

मृणाल पाण्डे की 'कर्कशा', 'हमसफर', 'चिमगादड़े', 'प्रतिशोध' आदि कहानियों में बहन के संबंध में नारी चरित्रों को चित्रित किया गया है। इनकी कर्कशा कहानी में बहन के रिश्ते में चित्रित नारी भारतीय आर्दर्श को प्रस्तुत करती है। इस कहानी की भग्गों अपनी बहन के आदर्श रूप में प्रस्तुत करते हुए कहती है कि ''मैं अपने बहन के घर से वस्त्र लाकर घर की साज–सज्जा करती हूँ इतना बड़ा परिवार है बहन का कि उनकी उतरनों से ही कई गृहस्थितियाँ चमक जाती।''[12]इस कहानी में लेखिका ने बहनों को एक–दूसरे की मदद करते हुए दिखाया है। इनकी 'सुफारी फुआ' कहानी की सुफारी फुआ को आदर्श भारतीय बहन के रूप में दिखाया हैं, इस प्रकार सुपारी फुआ' कहानी की सुफारी फुआ को आदर्श भारतीय बहन के रूप में दिखाया है, इस प्रकार सुपारी फुआ बहन होने के नाते अपने भाईयों व भाभियों का पूरा मान–सम्मान करती है। जिससे उसे मायके में शरण मिलती है। इनकी 'चिमगादड़े' कहानी की सोनिया व मारिया भी बहन के रिश्ते में चित्रित हुई हैं। लेकिन इन दोनों के बीच किसी न किसी बात को लेकर बहस होती रहती है। इनकी 'पितृदाय' कहानी में भी भाई–बहन के रिश्ते को दिखाया गया है। इस कहानी का नायक अपनी बहन के बारे में अपने मित्र को बताते हुए कहता है– ''बहन हमेशा से जहीन थी, सुंदर, मुंहफट, दबंग, उसके बाल मेमो जैसे भूरे और रंगत बाबू जैसी झक्क सफेद थी।''[13]इनके 'प्रतिशोध' कहानी की नायिका दमयंती अपने स्वभाव से अपने भाइयों का मान–सम्मान बढ़ाते हुए भारतीय बहन के आदर्श को व्यक्त करती है।

सास के रूप में नारी

मृणाल पाण्डे की कहानियों में स्त्री चरित्रों में सास के दो रूप दिखाई देते है। कहीं बहू को बेटी की तरह प्रेम करने वाली तो कहीं बहू के ऊपर कठोर नियंत्रण लगाती है। इनकी 'एक स्त्री का विदागीत' नामक कहानी में सास की भूमिका निभाती हुई सवित्री दोहरे व्यक्तित्व का परिचय देती है। एक ओर वह शादी–ब्योहों में पड़ोस की दस औरतों के

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Issue: 4 | Vol.: 8 | Oct.-Nov.-Dec.-2021 | Pages: 29–33 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

बीच बहू की दी धूसर रंगी रेशमी साड़ी पहने सावित्री हाथ हिला–हिलाकर सुषमा की उदारता, उसकी गुणशीलता और परिवार के प्रति प्रेम का बखान करती तो औरते विगलित होकर कह उठती– 'आहाहा दान किए होंगे तुमने मुनुआ की अम्मा''[14]दूसरी ओर सावित्री अपनी बेटियों के बेहकावे में आकर अपनी बहू पर विश्वास नहीं कर पाती। उसका यह रूप उस समय सामने आता हैं। जब वह ऑपरेशन के समय अपनी चाबी का गुच्छा अपनी बहू न देकर अपनी बेटी को देती है। इनकी 'आततायी' कहानी में सास अपने बहू के प्रति कठोर व्यवहार व्यक्त करते हुए कहती है– ''कैसी–कैसी ऊँचे घरानों की लड़की देख रखी थी हमने इस नरेश के लिए अरे, तुम्हारे मामा जी की लड़की क्या कम थी, इकलौती लड़की थी पाँच–पाँच भाई देने वाले।''[15]इस प्रकार वह अपनी बहू को प्रताड़ित करती है। जिससे बहू को अत्याधिक दुःख होता है।

बहू के रूप में नारी

मृणाल पाण्डे ने अपनी कहानियों में नारी के विविध रूपों को उजागर करते हुए बहू के रूप को अत्याधिक महत्व दिया है। इनकी 'एक स्त्री का विदागीत' कहानी में बहू सुषमा सुशिक्षित एंव कामकाजी है। जो आदर्श बहू के रूप में सामने आती है। वह अपने परिवार के सभी सदस्यों का ख्याल रखती है और समझदारी पूर्वक अपने दायित्वों का निर्वाह करती है– ''जीजी, एक और लो, गर्म है, हाय भाभी तुम तो खिला–खिलाकर मार डालोगी।''[16] सुषमा के इस व्यवहार से सभी लोग प्रभावित होते हैं। जब छोटी सरिता माँ से पूछती है कि भाभी कहा है। इस बात पर सावित्री कहती है ''लैक्चर तैयार कर रही होगी, इतने बड़े कॉलिज में पढ़ाती हैं, मेहनत ऐसी करती है कि क्या कहो, तिस पर घर का सारा काम कर जाती है। उसे तो हाथ भी नहीं हिलाना पड़ता। बहू हो तो ऐसी।''[17]

हमसफर कहानी में एक ऐसी बहू का चित्रण किया गया है जो असमय बैधव्य को तो झेलती ही है साथ ही अपनी ससुराल की अनुदारता और कठोरता को भी झेलती है लेकिन वह मुह से कुछ नहीं कहती और अपने व्यवहार से भारतीय आदर्श के धर्म को निभाती है। इसी प्रकार मृणाल पाण्डे की 'कैंसर'कहानी में बहू भारतीय आदर्श बहू के विपरीत रूप में चित्रित हुई है जो अपनी सास के कैंसर से ग्रस्त होने पर अपने दायित्वों को अपने धन संपदा से पूर्ण करना चाहती है– '' फिर नोटों का एक पुलिंदा उनके पास सरकाकर उठ गया था। वे चुपचाप उन्हें ताकती रही। आखिर सारे रिश्ते इसी ढेरो पर आकर चुक जाते है। बउआजी कहती थी।''[18] इस प्रकार लेखिका ने अपनी कहानियों में एक ओर बहू के रूप में चित्रित नारी का वह रूप दिखाया है। जो भारतीय आदर्श को प्रस्तुत करती है। दूसरी ओर वह जो भारतीय आदर्श बहू के विपरीत आचरण का परिचय देती है।

पुत्री के रूप में नारी

''यह धारणा नितांत भ्रामक है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति में पुत्र–पुत्री मे किसी तरह का भेदभाव किया जाता था। 'मनुस्मृति' का निम्नांकित श्लोक इसका प्रमाण है–

''यथौवास्ता तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समाँ
तस्यामात्मानि तिष्ठानतायां कथमन्ययों धनं हरेत्।।''[19]

अर्थात् जैसे आत्मा और पुत्र समान हैं और उसी प्रकार पुत्र और पुत्री समान हैं। इसलिए आत्मा के सदृश कन्या के रहते हुए दूसरा व्यक्ति (पिता के) धन को कैसे ले सकता है। .

मानव जीवन में नारी बहुविध रूपों में पुरुष को स्नेह देती है। हमारे आधुनिक समाज ने पुरातन संस्कृति के मूल्यों को भुला सा दिया है, तभी तो पुत्र–पुत्री में भेद भाव तथा बेटे को अपेक्षाकृत अधिक महत्व दिया जाना, बेटी के जन्म पर कोई उत्सव न मनाना, कन्या भ्रूण हत्या का बढ़ता ग्राफ नारी का अनेक प्रकार से उत्पीड़न को देखते हुए लगता है कि समाज द्वारा बेटे को ही अधिक महत्व दिया जाता रहा है।

मृणाल पाण्डे ने 'लड़कियाँ' नामक कहानी में इस बात को स्पष्ट अंकित किया है कि लड़की को कम महत्व दिया जाता है। इस कहानी में अष्टमीं के दिन देवी मानकर कन्याओं का पूजन किया जाता है, परन्तु फिर भी तीन लड़कियों की माँ पुत्र प्राप्ति की कामना करती है। समाज के एक ऐसे विरोधाभास को दिखाया गया है जहाँ एक ओर पुत्री को देवी के तुल्य माना जा रहा है लेकिन साथ ही पुत्र की अपेक्षा कमतर करके देखा जा रहा है।

मृणाल पाण्डे की कहानी 'कुनू' में एक ऐसी बेटी की कोमल भावनाओं को घुटते हुए दिखाया गया है जहाँ उसकी जिज्ञासाओं को माता–पिता नज़र अंदाज करते रहते ळें ''पिता खोये–खोये खाना खाते या रेडियो सुनते रहते, भाई रामपुरी चाकू कि किस्मों, छर्रे वाली बंदूकों और क्रिकेट में डूबा रहता, माँ बड़ी–मुगोड़ी और आचार या तो बनाती रहती या उन्हें बचाने का जतन करती रहती। घर में हर मर्तबान, हर कनस्तर का मुंह कसकर बंधा रहता। नमी के विरुद्ध हवा के विरुद्ध, संयम के विरुद्ध, उसके विरुद्ध! उससे कहा गया कि वह अचार न छुआ करें, क्योंकि अब उसके समय–बेसमय छूने से अचार बिगड़ सकता है। वह बड़ी– मुंगोड़ी के डिब्बे न खोले, क्योंकि वह उन्हें वापस कसकर बंद नहीं करती।''[20]इस कहानी में एक बेटी की बाल मन कल्पनाएं टूटने लगती हैं।

'ढलवान' कहानी में भी लेखिका ने इस बात को प्रस्तुत किया है कि हमारे समाज में जगह–जगह पर लड़कियों को नीतिशास्त्र के उपदेश दिए जाते हैं जिस कारण लड़की सहमी–सहमी सी रहने लगती है कहानी 'एक पगलाई स्पेंस

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

Issue: 4 | Vol.: 8 | Oct.-Nov.-Dec.-2021 | Pages: 29–33 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |

कथा' के माध्यम से भी ऐसी अनाथ कन्या की वेदना परिलक्षित होती है जो पराश्रित है। उसे न चाहते हुए भी रिश्तेदारों के घर रहना पड़ता हैं।

एक पुत्री के रूप में नारी खुद कांटो की राहों पर चलकर औरों की राहों में फूल ही बोती हुई दिखाई गई है फिर भी समाज अभी तक बेटियों के प्रति दोहरा बर्ताव करता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

कहानीकार मृणाल पाण्डे ने नारी के बहुविध रूपों में अंकन अपनी कहानियों में किया है। लेखिका की कहानियों में नारी विविध रूपों में अपने अस्तिव की गरिमा को बनाए रखने के लिए संघर्ष करती हुई प्रतीत हुई है।साथ ही सामाजिक सोच को भी उद्घाटित करती हैं ।

संदर्भ

1. बिष्ट, शेरसिंह, उत्तरांचल : भाषा एवं साहित्य का संदर्भ, प्रकाशकः इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली,पृ0 343
2. प्रेमचंद– गोदान, वाणी प्रकाशन, दरियांगज, नई दिल्ली पृ0 165
3. बिष्ट, शेरसिंह, वही, पृ0 345
4. पाण्डे, मृणालः चार दिन की जवानी तेरी, राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ0 15
5. वहीं, पृ0 52–53
6. पाण्डे, मृणालः यानी कि एक बात थी, राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी मार्ग, नई दिल्ली, पृ0 13
7. पाण्डे, मृणालः चार दिन की जवानी तेरी, पृ0 79
8. पाण्डे, मृणालः यानी कि एक बात थी, पृ0 34–35
9. बिष्ट, शेर सिंह, वहीं, पृ0 325
10. पाण्डे, मृणालः यानी कि एक बात थी, पृ0 14
11. पाण्डे, मृणालः बचुली चौकीदारिन की कढ़ी, पृ0 205
12. वही, पृ0 213
13. वहीं, पृ0 18
14. पाण्डे मृणालः एक स्त्री का विदागीत, राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ0 28
15. पाण्डे, मृणालः यानी कि एक बात थी, पृ0 144
16. पाण्डे, मृणालः एक स्त्री का विदागीत, पृ0 33
17. वही, पृ0 30
18. पाण्डे, मृणालः यानी कि एक बात थी, पृ0 120
19. बिष्ट, शेरसिंह, वही, पृ0 326
20. पाण्डे, मृणालः बचुली चौकीदारिन की कढ़ी, पृ0 106